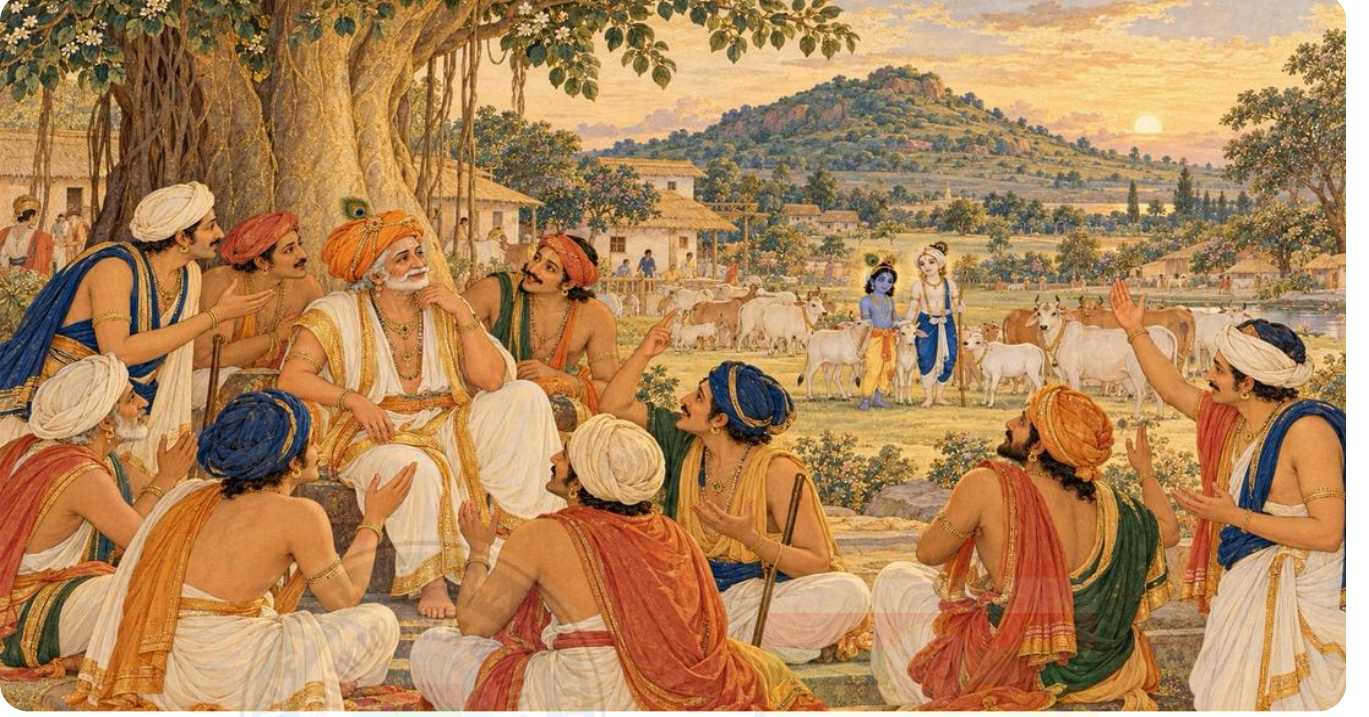


## श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 10 अध्याय 26 — अद्भुत कृष्ण

5 October 2026



सात वर्ष के एक बालक को सप्ताह भर गोवर्धन उठाए देखकर अब भी चकित व्रज के गोप नन्दबाबा को घेरकर बैठते हैं और उनके पुत्र के एक-एक अद्भुत कर्म को गिनते हैं — जब तक नन्द उन्हें वह नहीं सुना देते जो ऋषि गर्ग ने कभी उनसे कहा था, और उनका विस्मय आनन्दमयी पूजा में बदल जाता है।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम में पुनः स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं और शिक्षाओं की हमारी भक्तिमयी यात्रा। दशम स्कन्ध का यह छब्बीसवाँ अध्याय तूफान के बाद की शान्त घड़ी है: पर्वत फिर अपने स्थान पर टिक गया है, और व्रज के ग्वाले एक साथ बैठकर यह समझने का यत्न करते हैं कि उनकी गलियों में पला यह बालक आखिर है कौन। उनके प्रश्न का उत्तर अटकल से नहीं, एक ऋषि के वचनों से मिलता है, जिन्हें नन्द ठीक समय पर स्मरण करते हैं।

### अध्याय-परिचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण

- स्कन्ध: 10 (दशम स्कन्ध, पूर्वार्ध)
- अध्याय: 26 (षड्विंश अध्याय)
- अध्याय शीर्षक: अद्भुत कृष्ण
- मुख्य वक्ता: श्री शुकदेव गोस्वामी (राजा परीक्षित को सुनाते हुए); अध्याय के भीतर गोप और नन्द महाराज
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित; अध्याय के भीतर नन्द और गोपगण
- मुख्य स्थल: गोवर्धन के निकट व्रज (गोकुल), पर्वत उठाए जाने के बाद के दिन
- केंद्रीय विषय: कृष्ण के कर्मों पर गोपों का विस्मय, गर्ग की भविष्यवाणी का स्मरण, और विस्मय का पूजा में परिवर्तन
- मुख्य श्लोक-सीमा: स्कन्ध 10, अध्याय 26, श्लोक 1-25
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, भाग 2)

## पूर्व अध्याय का संदर्भ

पच्चीसवें अध्याय में अपनी पूजा रोक दिए जाने से क्रुद्ध इन्द्र ने व्रज पर प्रलय के मेघ छोड़ दिए। कृष्ण ने एक हाथ से गोवर्धन उठाकर सात दिन तक थामे रखा और हर मनुष्य और पशु को आश्रय दिया, जब तक लज्जित इन्द्र ने वर्षा रोक न दी। व्रजवासियों ने स्नेह से उन्हें गले लगाया, देवताओं ने पुष्प बरसाए, और कृष्ण बलराम तथा गोपों के साथ घर लौटे।

## विस्मय में डूबे गोप

शुकदेवजी ने राजा परीक्षित को कथा आगे सुनाई। गोपों ने कृष्ण के एक के बाद एक ऐसे कर्म देखे थे जो कोई मानव-बालक नहीं कर सकता, फिर भी वे उनकी वास्तविक शक्ति से अनजान थे। चकित होकर वे एकत्र हुए और कहने लगे — यदि इस छोटे-से बालक के कर्म इतने अलौकिक हैं, तो उसने हम जैसे साधारण ग्रामीणों के बीच जन्म क्यों लिया, जो उसके लिए इतना अयोग्य जान पड़ता है? सात वर्ष के बालक ने सप्ताह भर एक ही हाथ पर विशाल पर्वत वैसे ही थामे रखा, जैसे गजराज सूँड़ में कमल उठा लेता है।

यः सप्तहायनो बालः करेणैकेन लीलया ।

कथं बिभ्रद् गिरिवरं पुष्करं गजराडिव ॥ ३ ॥

*yaḥ sapta-hāyano bālaḥ kareṇaikena līlayā katham bibhrad giri-varaṁ puṣkaraṁ gaja-rāḍ iva*

अर्थ: सात वर्ष का बालक एक हाथ से, खेल-खेल में, पर्वतों में श्रेष्ठ गोवर्धन को कैसे थामे रह सका, जैसे गजराज कमल थामे रहता है? (स्कन्ध 10, अध्याय 26, श्लोक 3)

## स्मरण की गई लीलाएँ

उनका मन उन सब बातों पर लौट गया जो उन्होंने अपनी आँखों से देखी थीं। जब वह अधखुली आँखों वाला नन्हा शिशु था, तब महाबली पूतना ने उसे अपना स्तन पिलाया, और उसने दूध के साथ उसके प्राण भी वैसे ही खींच लिए जैसे काल चुपचाप हर प्राणी की आयु निगल जाता है। तीन मास की अवस्था में, छकड़े के नीचे लेटे रोते हुए, उसने अपने नन्हे पैरों की ठोकर से उसे उलट दिया। एक वर्ष की अवस्था में भूमि पर बैठे-बैठे उसे दैत्य तृणावर्त आकाश में उड़ा ले गया, और उसने गला दबोचकर उस दैत्य का वध कर दिया। और एक बार, माखन चुराने पर माता द्वारा ऊखल से बाँधे जाने पर, वह दोनों अर्जुन वृक्षों के बीच घुटनों के बल चला और भुजाओं के बल से दोनों को धराशायी कर दिया।



गोप उनके शैशव को स्मरण करते हैं: वह शिशु जिसने दूध के साथ पूतना के प्राण खींच लिए, ठोकर से उलटा छकड़ा, आकाश में वश में किया गया बवंडर-दैत्य तृणावर्त, और ऊखल से बाँधे बालक द्वारा गिराए गए दो अर्जुन वृक्ष (श्लोक 4-7)।

शैशव के साथ ये चमत्कार समाप्त नहीं हुए। बलराम और अन्य बालकों के साथ वन में बछड़े चराते हुए उसने बकासुर नामक बगुले को, जो उसे मारने आया था, चोंच पकड़कर चीर डाला। जब एक और दैत्य उसी इरादे से बछड़े का रूप धरकर झुंड में घुस आया, तो उसने उसे मारकर खेल-खेल में उसके शव से कपित्थ वृक्ष गिरा दिए। बलराम को साथ लेकर उसने गधे के रूप वाले दैत्य धेनुक और उसके सारे कुटुम्ब का नाश किया और पके फलों से लदे ताड़वन को सबके लिए निरापद बना दिया। उसने भयंकर प्रलम्ब को बलशाली बलराम के हाथों मरवाया, और व्रज के गोधन तथा ग्वालों को दावानल से बचाया। और उसने सर्पराजों में सबसे विषैले कालिय का दमन किया, उसका गर्व चूर कर उसे उसके कुण्ड से निकाल दिया, और यमुना के जल को विष से मुक्त कर दिया।



वे वन के वर्ष भी याद करते हैं: बगुला बकासुर, बछड़ा-दैत्य और कपित्थ वृक्ष, निरापद बना धेनुक का ताड़वन, बलराम द्वारा मारा गया प्रलम्ब, दावानल, और यमुना से निकाला गया कालिय (श्लोक 8-12)।

## “यह कैसे सम्भव है?”

तब गोपों ने नन्द से वह प्रश्न पूछा जो बाकी सब प्रश्नों के नीचे छिपा था। उन्हें केवल ये कर्म नहीं उलझाते थे; उलझाता था प्रेम। हर एक को, उन्होंने कहा, इस बालक से ऐसा अनुराग है जिसे चाहकर भी छोड़ा नहीं जा सकता, और बालक का उनके प्रति स्नेह भी उतना ही स्वाभाविक है, मानो उसके साथ ही जन्मा हो। ग्वालों के एक गाँव और ऐसे कर्म करने वाले बालक के बीच ऐसा बन्धन कैसे हो सकता है?

दुस्त्यजश्चानुरागोऽस्मिन् सर्वेषां नो व्रजौकसाम् ।

नन्द ते तनयेऽस्मासु तस्याप्यौत्पत्तिकः कथम् ॥ १३ ॥

*dustyajaś cānurāgo 'smīn sarveṣāṁ no vrajaukasām nanda te tanaye 'smāsu tasyāpy autpattikah katham*

अर्थ: हे नन्द, व्रज में रहने वाले हम सबका तुम्हारे इस पुत्र के प्रति अनुराग छोड़ा नहीं जा सकता, और हमारे प्रति उसका प्रेम भी स्वाभाविक और सहज है — यह कैसे? (स्कन्ध 10, अध्याय 26, श्लोक 13)

एक ओर सात वर्ष का बालक, उन्होंने कहा, और दूसरी ओर एक विशाल पर्वत का उठाया जाना — ये दोनों बातें मन में एक साथ नहीं बैठतीं। इसी कारण, उन्होंने व्रजराज से स्वीकार किया, उनके पुत्र के विषय में उनके मन में सन्देह उठ खड़ा हुआ है: कहीं यह बालक वह तो नहीं जो दिखता है।

## नन्द को गर्ग के वचन स्मरण आते हैं

नन्द ने अपनी कल्पना से उत्तर नहीं दिया। “हे गोपो, मेरी बात सुनो,” उन्होंने कहा, “और इस बालक के विषय में तुम्हारा सन्देह दूर हो जाए। मैं तुम्हें ठीक वही बताता हूँ जो ऋषि गर्ग ने इस बालक के बारे में मुझसे कहा था।”

गर्ग ने उनसे कहा था कि यह बालक प्रत्येक युग में शरीर धारण करता है, और ऐसा करते हुए उसने पहले तीन रंग — श्वेत, रक्त और पीत — धारण किए हैं, और इस युग में श्याम वर्ण।

वर्णास्त्रयः किलास्यासन् गृह्णतोऽनुयुगं तनूः ।

शुक्लो रक्तस्तथा पीत इदानीं कृष्णतां गतः ॥ १६ ॥

*varṇās trayah kilāsyāsan gṛhṇato 'nu-yugaṁ tanūḥ śuklo raktas tathā pīta idānīm kṛṣṇatām gataḥ*

अर्थ: युग-युग में शरीर धारण करते हुए इस बालक ने सचमुच तीन वर्ण धारण किए हैं — श्वेत, रक्त और पीत; अब उसने कृष्ण (श्याम) वर्ण ग्रहण किया है। (स्कन्ध 10, अध्याय 26, श्लोक 16)

गर्ग ने यह भी कहा था कि पूर्वकाल में नन्द का यह पुत्र वसुदेव के घर जन्मा था, इसलिए इस सत्य को जानने वाले ज्ञानी उसे यथोचित रूप से श्रीमान् वासुदेव कहेंगे। इस बालक के नाम और रूप अनेक हैं, जो उसके गुणों और कर्मों के अनुरूप हैं; उन्हें गर्ग स्वयं जानते हैं, साधारण जन नहीं।

## रक्षा का आश्वासन

फिर आया व्रज के लिए ऋषि का आश्वासन। यह बालक गोपों का और समस्त गोकुल का आनन्द है, और वह तुम्हारा कल्याण करेगा; उसकी सहायता से तुम हर कठिनाई सहज ही पार कर लोगे। पूर्वकाल में, हे व्रजराज, जब कोई राजा न था और सज्जन डाकुओं से पीड़ित थे, तब इसी ने उनकी रक्षा की और उन्हें बल दिया, यहाँ तक कि वे विजयी हुए। और जो कोई इस बालक को प्रेम देता है, ऋषि ने वचन दिया था, वह ऐसी शरण में खड़ा है जिसे कोई शत्रु भेद नहीं सकता।

य एतस्मिन् महाभागे प्रीतिं कुर्वन्ति मानवाः ।

नारयोऽभिभवन्त्येतान् विष्णुपक्षानिवासुराः ॥ २१ ॥

*ya etasmin mahā-bhāge prītiṁ kurvanti mānavāḥ nārāya 'bhibhavanty etān viṣṇu-pakṣān ivāsurāḥ*

अर्थ: जो भाग्यशाली मनुष्य इस परम सौभाग्यशाली बालक से प्रेम करते हैं, उन्हें शत्रु वैसे ही पराजित नहीं कर सकते, जैसे असुर विष्णु के पक्ष वालों को नहीं हरा सकते। (स्कन्ध 10, अध्याय 26, श्लोक 21)

गर्ग ने अपनी बात उस वाक्य से समाप्त की थी जो गोपों के हर भावी प्रश्न का उत्तर पहले ही दे देता है: हे नन्द, तुम्हारा यह पुत्र गुणों में, ऐश्वर्य में, कीर्ति में और प्रभाव में भगवान् नारायण के समान है — इसलिए उसके किसी भी कर्म पर आश्चर्य मत करना।

तस्मान्नन्द कुमारोऽयं नारायणसमो गुणैः ।

श्रिया कीर्त्यानुभावेन तत्कर्मसु न विस्मयः ॥ २२ ॥

*tasmān nanda kumāro 'yam nārāyaṇa-samo guṇaiḥ śriyā kīrtyānubhāvena tat-karmasu na vismayah*

अर्थ: इसलिए हे नन्द, यह कुमार गुण, श्री, कीर्ति और प्रभाव में नारायण के समान है; उसके कर्मों में आश्चर्य की कोई बात नहीं। (स्कन्ध 10, अध्याय 26, श्लोक 22)

## नन्द का अपना विश्वास

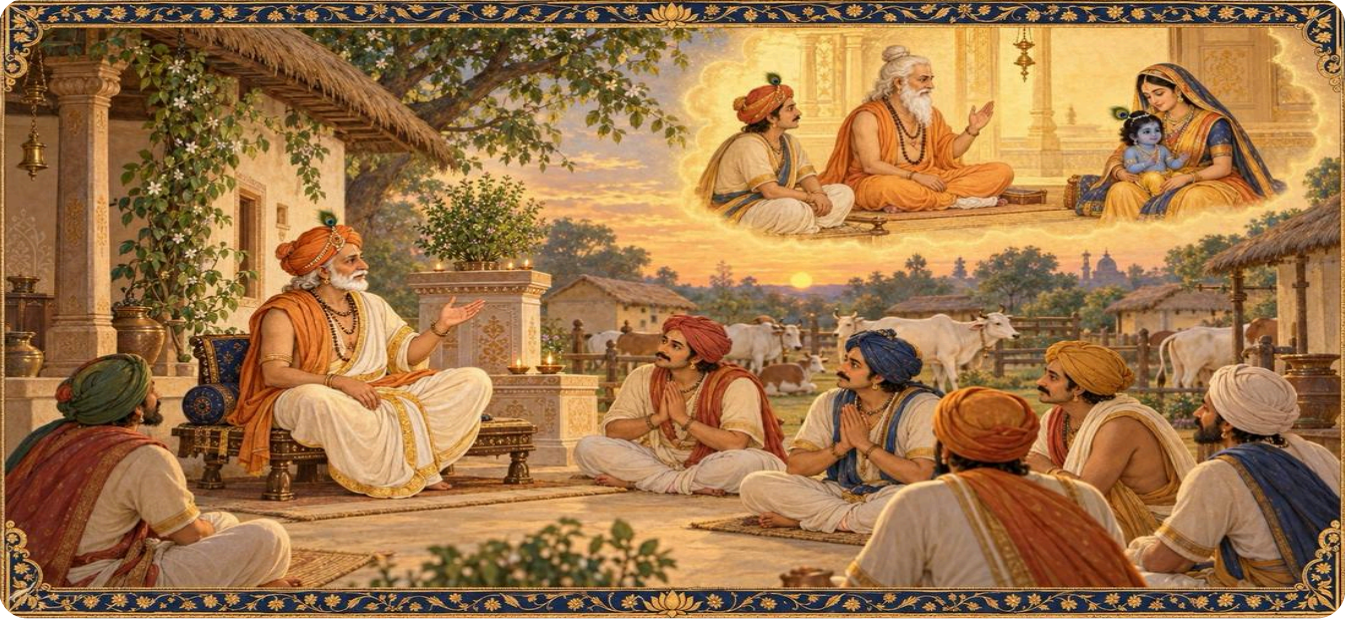
गर्ग के वचन सुनाकर नन्द ने अपनी दृढ़ धारणा भी जोड़ी। जिस दिन ऋषि ने स्पष्ट शब्दों में यह उपदेश देकर अपने आश्रम को प्रस्थान किया, नन्द ने कहा, उसी दिन से वे कृष्ण को, जिन्होंने बार-बार उनके सिर से संकट हटाया है, स्वयं भगवान नारायण का अंश मानते आए हैं।

इत्यद्धा मां समादिश्य गर्गे च स्वगृहं गते ।

मन्ये नारायणस्यांशं कृष्णमक्लिष्टकारिणम् ॥ २३ ॥

*ity addhā mām samādiśya garge ca sva-gṛhaṁ gate manye nārāyaṇasyāṁśaṁ kṛṣṇam akliṣṭa-kāriṇam*

अर्थ: इस प्रकार मुझे स्पष्ट उपदेश देकर गर्ग अपने घर लौट गए; और मैं कृष्ण को, जो हमें हर क्लेश से छुड़ाते हैं, नारायण का अंश मानता हूँ। (स्कन्ध 10, अध्याय 26, श्लोक 23)



उनका सन्देह मिटाने के लिए नन्द वह दोहराते हैं जो ऋषि गर्ग ने कभी उनसे बालक के विषय में कहा था: यह बालक युग-युग में प्रकट हुआ है, अनेक नाम और रूप धारण करता है, और स्वयं नारायण के समान है (श्लोक 15-23)।

## विस्मय पूजा में बदल जाता है

व्रजवासियों ने अनन्त तेज वाले कृष्ण की महिमा अपनी आँखों से देखी और दूसरों से सुनी भी थी; अब उन्होंने नन्द के मुख से गर्ग का यह गान सुना। उनका विस्मय जाता रहा। आनन्द से भरकर उन्होंने नन्द की पूजा की और कृष्ण की भी — अब किसी पहेली के रूप में नहीं, बल्कि व्रज की उस निधि के रूप में जिसकी महिमा अन्ततः नाम लेकर कह दी गई थी।



नन्द के मुख से गर्ग का गान सुनकर व्रजवासियों का विस्मय जाता रहता है और वे आनन्द से भरकर नन्द और कृष्ण दोनों की पूजा करते हैं (श्लोक 24)।

## गोवर्धनधारी को समापन-प्रार्थना

शुकदेवजी ने अध्याय को एक ऐसे मंगल-वचन से सम्पन्न किया जो सम्पूर्ण गोवर्धन-लीला को स्तुति की एक ही साँस में समेट लेता है।

देवे वर्षति यज्ञविप्लवरुषा वज्राश्मवर्षानिलैः

सीदत्पालपशुस्त्रियात्मशरणं दृष्ट्वानुकम्प्युत्समयन् ।

उत्पाट्यैककरेण शैलमबलो लीलोच्छिलीन्ध्रं यथा

बिभ्रद् गोष्ठमपान्महेन्द्रमदभित् प्रीयान्न इन्द्रो गवाम् ॥ २५ ॥

*deve varṣati yajña-viplava-ruṣā vajrāsma-varṣānilaiḥ sīdat-pāla-paśu-striy ātma-śaraṇaṁ  
dṛṣṭvānukampy utsmayan utpāṭyaika-kareṇa śailam abalo lilocchilīndhram yathā bibhrad  
goṣṭham apān mahendra-mada-bhit priyān na indro gavām*

अर्थ: जब अपनी पूजा भंग होने से क्रुद्ध इन्द्र ने वज्र, ओलों और प्रचण्ड वायु के साथ वर्षा की, तब कृष्ण ने व्रज के ग्वालों, पशुओं और स्त्रियों को पीड़ित और केवल अपने ही आश्रित देखा; दया से द्रवित होकर और मुस्कराते हुए उन्होंने एक हाथ से पर्वत को वैसे ही उखाड़ लिया जैसे बालक कुकुरमुत्ता उखाड़ ले, उसे ऊँचा थामकर गोष्ठ की रक्षा की और महेन्द्र का मद चूर किया। गौओं के वे स्वामी कृष्ण हम पर प्रसन्न हों। (स्कन्ध 10, अध्याय 26, श्लोक 25)

### इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. जब हम जान लेते हैं कि वे कौन हैं, तब उनके कर्म विस्मित नहीं करते। गर्ग का निष्कर्ष (श्लोक 22) इस अध्याय का हृदय है: बालक की उँगली पर पर्वत तभी तक अकल्पनीय है जब तक बालक को साधारण बालक समझा जाए। गोपों का विस्मय इसलिए उपजा कि वे उनकी शक्ति नहीं जानते थे, और ज्यों ही उनका स्वरूप नाम लेकर कह दिया गया, वह मिट गया। इसीलिए प्रभु ने ऐसा विधान रचा कि ऋषि के वचन बहुत पहले कहे जाएँ और ठीक उस दिन स्मरण हों जब ग्वालों का हृदय अपना विस्मय और न सँभाल सके। वे चाहते थे कि उनके जनों का प्रेम भय से मुक्त हो, पर उन्हें नन्द का पुत्र मानने की आत्मीयता न खोए; इसलिए उत्तर कोमलता से, एक विश्वसनीय बड़े के मुख से आया, और स्नेह ज्यों-का-त्यों बना रहा।
2. सन्देह ज्ञानियों के वचनों से शान्त होता है। नन्द तर्क से उत्तर नहीं गढ़ते; वे वही दोहराते हैं जो उन्हें कहा गया था और उसमें अपनी धारणा जोड़ते हैं (श्लोक 23)। अनुभवी मार्गदर्शक से सुनना और उसे प्रभु की रक्षा के अपने अनुभव पर कसना — इसी से श्रद्धा परिपक्व होती है।
3. व्रज का प्रेम सहज है, चमत्कारों से मोल लिया हुआ नहीं। ग्वाले अपने अनुराग से उतने ही चकित हैं जितने पर्वत से (श्लोक 13)। ऐसी भक्ति स्वाभाविक और अत्याज्य है — यह आत्मा के उनके साथ नित्य सम्बन्ध की ओर संकेत है।
4. जो उनसे प्रेम करते हैं, वे कभी पराजित नहीं होते। गर्ग का वचन (श्लोक 21) यह नहीं कहता कि भक्तों के सामने शत्रु नहीं आएँगे; केवल यह कि शत्रु उन पर हावी नहीं होंगे। प्रभु की शरण अन्तिम विजय का आश्वासन है, संकटहीन जीवन का नहीं।
5. पर्वत करुणा से उठाया गया। समापन-प्रार्थना (श्लोक 25) प्रेरणा का नाम लेती है: उन्होंने अपने जनों को संकट में, केवल अपने आश्रित देखा, और दया तथा मुस्कान के साथ कर्म किया। भागवत में दिव्य शक्ति सदा प्रेम की पुकार पर चलती है।

## एक भाक्तेमय चिन्तन

इसमें कुछ बहुत कोमल है कि एक पूरा गाँव बैठकर उस बालक के बारे में सोचे जिसे सबने अपने कन्धों पर उठाया था। उन्होंने उसे माखन चुराने पर डाँटा और ऊखल से बाँधा था; अब उन्होंने उसे पहाड़ उठाए देखा था। जो हमें छूता है वह यह कि उनकी उलझन कभी दूरी में नहीं बदली। वे कृष्ण से पीछे नहीं हटे; वे नन्द के निकट आए और पूछा, और उत्तर मिलने पर पिता और पुत्र दोनों का सम्मान किया। प्रभु ने स्वयं को पड़ोसी के बालक की तरह प्रेम किए जाने दिया, और ठीक समय पर उसी प्रेम को यह बताए जाने दिया कि वह किसका बालक है। शायद हम सबके साथ वे ऐसा ही करते हैं: हम वर्षों उन्हें एक परिचित उपस्थिति की तरह जानते हैं, उनके मौन उद्धारों को आधा-अधूरा देखते हुए, जब तक गर्ग जैसा कोई वचन हमें यह न बता दे कि हमारे सिर पर पर्वत कौन थामे रहा है। हमारी खोज भी वैसे ही पूरी हो जैसे उनकी हुई: विस्मय समाप्त, और पूजा आरम्भ।

## एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज कुछ क्षण बैठकर, गोपों की तरह, उन क्षणों को गिनिए जब आपकी चुपचाप रक्षा हुई — जो संकट टल गए, जो बोझ समझने से पहले ही उतर गए। हर एक के बाद धीरे से कहिए, जैसा गर्ग ने नन्द से कहा था, कि उनके कर्मों में आश्चर्य की कोई बात नहीं; फिर दिन का कार्य उनके हाथों में सौंप दीजिए। आरम्भ में धीरे-धीरे जपें: ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

## उपसंहार

इस छब्बीसवें अध्याय में व्रजवासी उलझन से श्रद्धा तक पहुँचते हैं। कृष्ण के चमत्कारों की उनकी सूची प्रेम के विषय में एक प्रश्न पर समाप्त होती है, और नन्द गर्ग की भविष्यवाणी से उत्तर देते हैं: यह बालक युग-युग में प्रकट होता रहा है, अनेक नाम और रूप धारण करता है, अपने प्रेमियों की रक्षा करता है, और हर गुण में नारायण के समान है। उनका विस्मय पूजा में घुल जाता है, और शुकदेवजी करुणामय गोवर्धनधारी की प्रार्थना से समापन करते हैं। हम भी यह सीख लें कि उनकी कृपाएँ संयोग नहीं हैं, और निर्भय होकर उनमें विश्राम पाएँ।

श्रीमद्भागवतम् का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

## संदर्भ एवं आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, भाग 2), दशम स्कन्ध (पूर्वार्ध), षड्विंश अध्याय, पृष्ठ 215–217।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज़्डम • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी एवं लिप्यन्तरण सहित दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में प्रस्तुत हैं। यह किसी एक प्रकाशक के सतत अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक के संबंध या समर्थन का दावा नहीं किया गया है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: [kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-10-chapter-26-wonderful-krishna-hi.html](http://kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-10-chapter-26-wonderful-krishna-hi.html)

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

